ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

मिर्जापुर जनपद में मनरेगा और ग्रामीण–शहरी प्रवास

MNREGA And Rural-Urban Migration in Mirzapur District

Paper Submission: 03/03/2021, Date ofAcceptance: 24/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

सारांश

मनरेगा योजना यू पी ए सरकार का एक प्रमुख कल्याण कार्यक्रम है और भारत में हीं नहीं अपितु विश्व में भी अपनी तरह की सबसे बड़ी योजना है। मनरेगा में रोजगार के साथ हीं साथ मौसमी ग्रामीण – नगरीय प्रवास को कम करने से इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। लीन सीजन के दौरान मनरेगा द्वारा प्राप्त आय से परिवार के जीवन – स्तर व विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। मनरेगा योजना द्वारा सार्वजनिक कार्य से रोजगार के अवसर में वृद्धि हुई है। अब गाँव में हीं रोजगार उपलब्ध होने के कारण मनरेगा ग्रामीण – शहरी पलायन को कम करने में मील का पत्थर साबित हुआ।

The MNREGA scheme is a major welfare program of the UPA government and is the largest scheme of its kind not only in India but also in the world. This will have a positive impact on employment in MNREGA as well as reducing seasonal rural-urban migration. The income received by the MNREGA during the lean season had a significant impact on the standard of living and development of the family. Employment opportunities from public works have increased through MNREGA scheme. Now with employment available in the village itself, MNREGA proved to be a milestone in reducing rural-urban migration.

मनोज कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
टी. डी. पी. जी. कालेज,
जौनपुर उ०प्र०, भारत

संदीप सरोज
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
टी. डी. पी. जी. कालेज,
जौनपुर उ०प्र०, भारत

मुख्य शब्द : मनरेगा, बेरोजगारी, संकट प्रवास, प्रदर्शन, कृषि, शिक्षा, पलायन, विकास।
MNREGA, Unemployment, Crisis Migration, Demonstration, Agriculture, Education, Migration, Development.

प्रस्तावना

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम (MGNREGA) हलांकि 7 सितम्बर सन 2005 को अधिसूचित किया गया था, जिसे अप्रैल 2008 में भारत के सभी ग्रामीण जिलों में लागू कर दिया गया था। यह योजना देश में अपनी तरह की ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिए शुरू किया गया अब तक का सबसे बड़ा रोजगार प्रदान करने वाला कार्यक्रम है। जिसका उद्देश्य प्रत्येक ग्रामीण परिवार के वयस्क सदस्य को एक वर्ष में 100 दिनों की गारण्टी युक्त मजदूरी रोजगार प्रदान करना है। यह योजना एक ओर तो संचालित मांग आधारित है और दूसरी ओर रोजगार को ग्रामीण परिवारों के अधिकार के रूप में माना जाता है। इस प्रकार यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों मे अकुशल श्रमिकों को सीधे आय प्रदान करती है। मनरेगा ने एक महत्वपूर्ण सुधार को लगातार उन दिनों से जुड़ा हुआ दिखाया है जिनके लिए रोजगार उपलब्ध कराया गया है। इसमें महिलाओं की सहभागिता मे बढ़ोत्तरी हुई है। इसके द्वारा न केवल उन्हें रोजगार मिला बल्कि एक पुरुष के बराबर मजदूरी दे कर इसने महिलाओं को सामाजिक व आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है।

तमिलनाडु मानसिक रूप से बीमार महिलाओं को रोजगार देने वाला पहला राज्य है जो एक गाँव में हर परिवार के एक वयस्क सदस्य को न्यूनतम 100 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से मजदूरी भुगतान करता है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

मिर्ज़ापुर जनपद भारत के उत्तर – प्रदेश राज्य के दक्षिण – पूर्वी भाग में स्थित जिला है। पर्यटन की दृष्टि से मिर्जापुर काफी महत्वपूर्ण जिला माना जाता है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक वातावरण बरबस लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचती है। जनपद का भौगोलिक विस्तार $25^{0}09'$ उत्तरी अक्षांश से $25^{0}15'$ उत्तरी अक्षांश तथा $82^{0}35'$ पूर्वी देशांतर से $82^{0}58'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4521 वर्ग किमी. है। यहाँ उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु पायी जाती है। जनपद में 4 तहसीलें है जिसके अन्तर्गत 12 विकासखण्ड और 771 ग्राम पंचायतें हैं।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इस जनपद की कुल जनसंख्या 2496970 हैं जिसमें 1312302 पुरुष तथा 1184668 महिलाएं हैं। यहाँ का जनसंख्या घनत्व 567 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. एवं लिंगानुपात 903 प्रति हजार है। इस जनपद की कुल जनसंख्या का 13.02 प्रतिशत नगरों में तथा शेष भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। इस जिले की साक्षरता दर 68.5 प्रतिशत है।

Location Map of Study Area

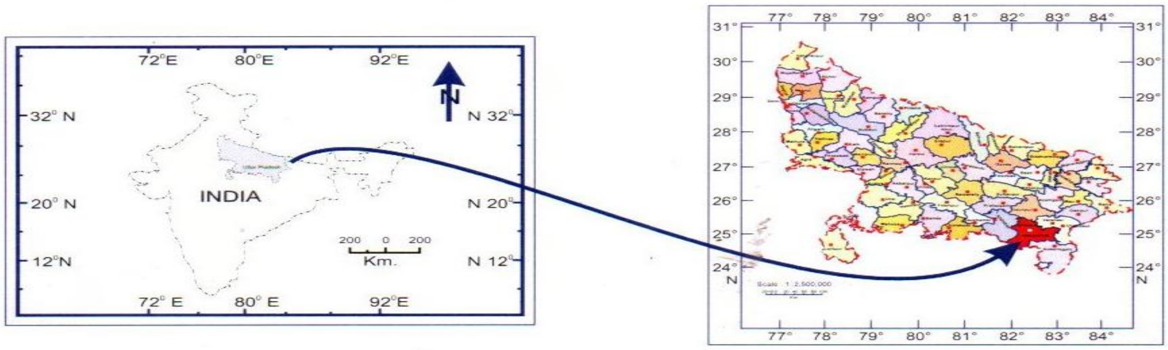

साहित्य समीक्षा

कोफे डॉ. (2001) बाल कल्याण और ग्रामीण भारत से अल्पकालिक में डॉ कोफे ने बताया माता के पलायन की अवधि बच्चों के पलायन से जुड़ी है। इस लिए माताओं के पलायन को कम करने से बच्चों को माता – पिता की देखभाल में छोड़कर पलायन करने वाले, पलायन न करने वाले बच्चों की शिक्षा में मौजूद अंतराल को कम करने में सहायता मिल रही है।

ड्रेज एवं खेरा, (2009) महात्मा गाँधी नरेगा के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में इस बात पर हमेशा बात होती रही की क्या वाकई में इसके जो पात्र है उनको लाभ मिलता है या अपात्र भी इसका लाभ ले रहे है इस सम्बन्ध में ड्रेज एवं खेरा ने 2007–08 में देश के राज्यों में सर्वेक्षण आधारित अध्ययन किया और उन्होंने अपने शोध में पाया कि 98% चयनित लाभार्थियों ने 100 दिनों की न्यूनतम सीमा या उससे अधिक कार्य करने की इच्छा व्यक्त की

थी, परंतु उनमें से मात्र 13ः लाभार्थियों को हीं निर्धारित न्यूनतम 100 दिनों का कार्य मिल पाया। अर्थात इससे यह निष्कर्ष निकलता है की बेरोजगारी का दर वही रहता है जिससे की लोग पलायन करने को विवश हो रहे है।

"Kumar P-Mnrega:Employment] WageAnd Migration in India" में उन्होंने भारत में ग्रामीण विकास के लिए बहुउद्देशीय कार्य जैसे रोजगार का अधिकार, निर्धनता में कमी, प्रवास में कमी एवं बुनियादी संरचना के लिए मनरेगा को महत्वपूर्ण बताया। जो रोजगार की समस्या, कृषि मजदूरी में वृद्धि आजीविका के साधन और खाद्य सुरक्षा, लिंग भेद की समस्या, पलायन में कमी जैसे विभिन्न दृष्टिकोण से यह योजना सफल रही। इस योजना को अधिक सफल बनाने एवं श्रमिक कल्याण के लिए जनपद स्तर पर लोकपाल की नियुक्ति का सुझाव दिया।

ग्रामीण – शहरी प्रवास

प्रवास एक नकारात्मक विचार या शक्ति के रूप में , संकट प्रवास पर ध्यान केन्द्रित करता है जो कि उस समय होता है जब लोगों को काम खोजने के लिए शहरों की ओर जाना पड़ता है। क्योंकि वे अपने स्वयं के गांवों में जो कमा सकते है उस पर जीवित नहीं रह सकते या उतने भर मात्र से उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं हो सकती कारण यह है कि काम की अनियमितता जिससे की अधिक से अधिक लोग बेगार हीं रह जाते है।

इसी तरह विकासशील देशों में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवास में तीव्रता आई है। जिससे नगरीय करण की गति भी तीव्र हुई है। यह प्रवास मुख्यतः दो विपरीत परिस्थितियों से नियंत्रित होता है दृ

1. ग्रामीण दबाव शक्ति
2. नगरीय आकर्षण शक्ति

ग्रामीण दबाव शक्ति के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में निर्भरता, रोजगार के अवसरों में कमी , बेरोजगारी , शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन जैसी सामान्य सुविधाओं का आभाव या कमी, आधारभूत संरचनाओं के कम विकास के कारण ग्रामीण जनसंख्या का प्रवास नगरों की ओर बेहतर जीवन – यापन और आर्थिक विकास को प्राप्त करने के लिए होता है।

नगर सामान्यतः सभ्यता व संस्कृति के केंद्र होते है साथ ही उद्योग व्यापार, परिवहन , शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन के केंद्र होते है एवं आधारभूत संरचनाओं का पर्याप्त विकास रहता है साथ ही रोजगार के अवसर, उच्च जीवन की गुणवत्ता अधिक रहती है जिस कारण नगर ग्रामीण जनसंख्या के आकर्षण का केंद्र रहता है। भारत सहित सभी विकासशील देशों की भांति मिर्जापुर जनपद में भी ग्रामीण क्षेत्र से नगर की ओर प्रवास की मात्रा अधिक होती है।

शोध उद्देश्य –रू

1. कृषि पर पलायन के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शिक्षा और प्रवास के बीच सम्बन्धों का विश्लेषण करना।
3. ग्राम से नगर की ओर पलायन प्रतिरूप का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

यह शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है –

प्राथमिक आंकड़ों का संकलन व्यक्तिगत सर्वेक्षण, प्रश्नावली व अनुसूची तथा साक्षात्कार द्वारा किया गया है।

द्वितीयक आंकड़ों का संग्रह पत्र – पत्रिकाओं तथा अप्रकाशित शोध पत्रों व पुस्तकों, रिपोर्ट, इंटरनेट इत्यादि के माध्यम से आंकड़ों को प्राप्त कर उनका परिकलन किया गया है।

कृषि पर पलायन का प्रभाव

मजदूरी मे मनरेगा की आय के दो आयाम है पहला परिवारों के मालिक हैं जो छोटी जोत जो पूरे वर्ष के लिए खाद्य सुरक्षा उत्पन्न करने या अन्य आधारभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए नकदी का अतिरिक्त अधिशेष बनाने के लिए अपर्याप्त है।

अधिकांश स्थितियों मे यह पाया गया है कि ग्रामीण आयु वर्ग का रोजगार की तलाश मे अपने शहर से दूसरे अन्य शहरों मे रोजगार की तलाश मे अधिकांशतः पलायन होता है जिससे ग्राम्य मे एक मजदूर वर्ग की बहुत कमी होती है और इसका सीधा असर कृषि पर पड़ता है जिससे कृषि मे पिछड़ापन और उत्पादकता पर भी बुरा असर पड़ता है। इन्हीं को ध्यान मे रखते हुए केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना मनरेगा ने कुछ हद तक पलायन को रोकने मे सफलता प्राप्त की है। किसानों को अब उनके घर, गाँव, विकासखण्ड मे ही रोजगार मिल रहा सबसे ज्यादा खुशी ग्रामीणों मे इस बात को ले कर है की घर के आस – पास काम मिलने की वजह से पति – पत्नी दोनो काम करके अपने मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से कर ले रहे है। महिलाओं को भी अब अपनी छोटी – मोटी जरूरतों के लिए किसी के सामने हाथ नही फैलाना पड़ रहा अर्थात यह योजना महिलाओं को आर्थिक संबल प्रदान करने मे मिल का पत्थर साबित हुई। गांवों इस बात को ले कर ग्रामीणों मे खुशी है उन्हें काम के साथ ही सम्मान मिल रहा है एवं कार्यस्थल पर उनकी आधारभूत जरूरतों का भी ध्यान रखा जाता है। उन्हें यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि ष्अब गाँव शहर एक साथ चलेंगे, देश हमारा आगे बढ़ेगा।ष

शिक्षा और प्रवास के बीच सम्बन्ध

ग्रामीणों को अपने परिवारों के साथ यह उम्मीद है कि वे शहरों में अपने बच्चों को रोजगार देने में सक्षम हो सकते हैं। यह न केवल बालश्रम के खतरों के लिए बच्चों को उजागर कर रहा है बल्कि शैक्षणिक वर्ष के दौरान स्कूल छोड़ने वाले बच्चों के लिए भी अग्रणी है, जो दर्शाता है कि कैसे बच्चों के लिए शिक्षा कि कमी से सीधे प्रवास जुड़ा था। लोगों ने कहा कि अगर 10–14 साल के बच्चों के लिए आवासीय विद्यालय होते तो अधिक अभिवावक अपने बच्चों को स्कूल में रखते। यह पाया गया कि कुछ ग्रामीणों ने अपनी मनमानी कमाई को अपने वार्डों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए प्रवेश शुल्क का भुगतान करके, पुस्तकों की खरीद, ट्यूशन प्रदान करने, स्कूल की ड्रेस खरीदने, साइकिल आदि के निर्माण के लिए खर्च किया। साइकिल से या पैदल चलकर स्कूल जाने के लिए बेहतर कनेक्टिविटी मिली और अब बच्चे

स्कूल जाने के मामले में अधिक नियमित है। बच्चों की शिक्षा के लिए अतिरिक्त मजदूरी आय का उपयोग करने की एक स्पष्ट प्रवृत्ति है। यह बच्चों की बेहतर शिक्षा के लिए अन्तर्निहित मांग का मामला बनाता है। मनरेगा से लाभान्वित परिवारों में से अधिकांश ने बच्चों की शिक्षा तक पहुंचने के लिए अपनी आय का उपयोग किया या गुणवत्ता मे सुधार के लिए अतिरिक्त सुविधाओं के साथ पूरक है।

पलायन का प्रतिरूप

जनपद मिर्जापुर में वर्ष 1991 से वर्ष 2001 व वर्ष 2001 से वर्ष 2011 के दशकों (प्राप्त आंकड़ों के आधार पर) में व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं प्रश्नावली के द्वारा ग्राम से नगर में होने वाले प्रवास की प्रवृत्ति का आयु वर्ग वार अध्ययन किया गया। जिसमें 15–30 व 30–45 आयु वर्गों में पुरुषों एवं महिलाओं दोनों का स्थानांतरण अन्य आयु वर्ग की अपेक्षा अधिक पाया गया जो कि प्रवास की सामान्य अवधारणा की प्रवास की सर्वाधिक दर, क्रियाशील आयुवर्ग (15–45 वर्ष) में पायी जाती है की पुष्टि होती है

जनपद मिर्जापुर : ग्राम से नगर प्रवास (कुल जनसंख्या का प्रतिशत)

आयुवर्ग	स्त्रीपुरुष/	1991-2001 (%)	2001-2011 (%)	अंतर (%)
>15	पुरुष	7	10	42.86
	स्त्री	5	8	60.00
15-30	पुरुष	10	12	20.00
	स्त्री	6	8	33.33
30-45	पुरुष	9	10	11.11
	स्त्री	8	9	12.50
45-60	पुरुष	8	10	25.00
	स्त्री	7	8	14.29
60 से अधिक	पुरुष	6	8	33.33
	स्त्री	4	5	25.00

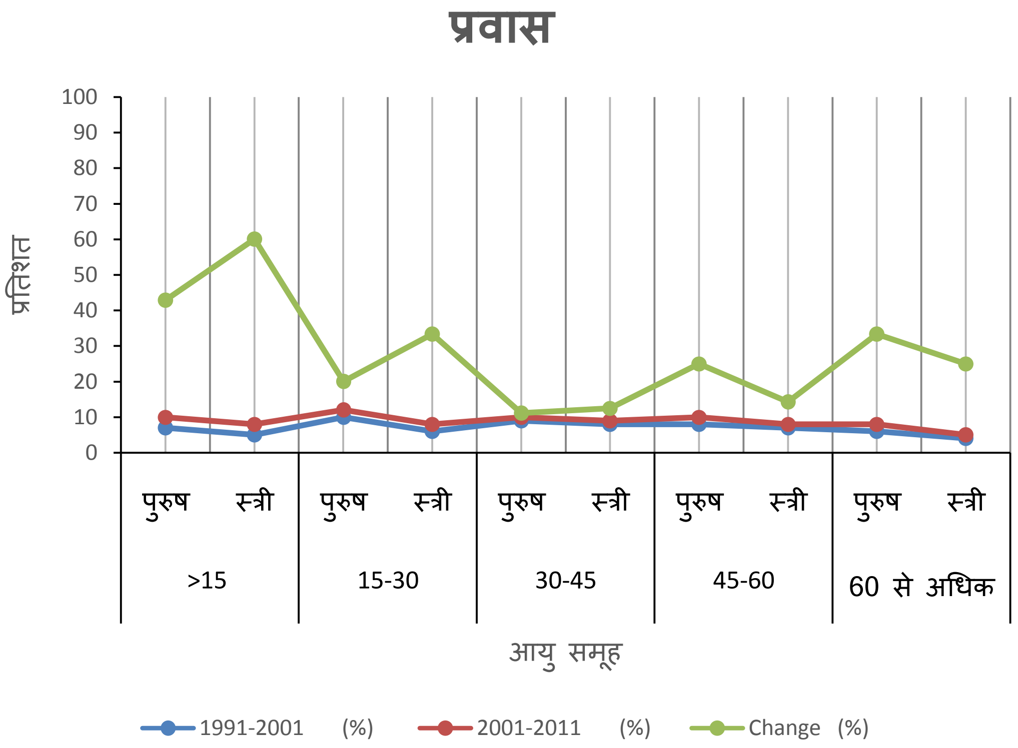

निष्कर्ष

शोध क्षेत्र का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उच्च शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण के लिए युवा विद्यार्थी वर्ग गांव से शहर की ओर प्रतिवर्ष प्रवास करते है। साथ ही साथ शिक्षित एवं प्रशिक्षित युवा व अकुशल श्रमिक भी रोजगार के अवसर प्राप्ति के लिए नगरों की ओर प्रवास करते है और नगरों मे प्रवासित जनसंख्या में से जिनको अच्छे रोजगार के अवसर व उच्च

जीवन की गुणवत्ता प्राप्त हो जाती है। नगरों में स्थायी रूप से निवासित हो जाते हैं जिससे प्रवास द्वारा नगरीयकरण एवं नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि देखी जाती है साथ हीं साथ प्रवास की मात्रा के अनुसार नगरों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आवास व अन्य आधारभूत सुविधाओं की कमी होने के कारण नगरों में जीवन की गुणवत्ता एवं आर्थिक अवसर में समस्या उत्पन्न होती है और नगर पर जनसंख्या का दबाव बढ़ता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कोफे डी. (2001) बाल कल्याण और ग्रामीण भारत से अल्पकालिक पलायन विकास अध्ययन पत्रिका।*
2. *ज्या द्रेज एवं खेरा, 2009 सर्वेक्षण*
3. *Kumar P. 2006: MNREGA;Employment , WageAnd Migration in India : Chapman &Hall.*
4. *Role of MGNREGA in Rural Employment:A review , Santosh Kumar , lecturer in sociology , Govt. PU College Karnataka , international journal of economicsAnd Bussiness review , ISSN 2347-9671 .*
5. *Role of MNREGA to Eliminate poverty from india ,Dr. Vikas kumarAssitant Professor , Department of Commerce , Govt.Raja (PG)College , Rampur , October 2014 Vol IX No.2 ISSN :0973-4503 RNI :UPENG 2006/17831.*
6. *MGNREGA: the Role in inclusive Growth Md.RahmatullahAstt.prof.in economics Department of law,A.M.U.,Aligarh.*
7. *Thomas Solinski, 2012," NREGAAnd labour migration in India: Is village life what the ' Rural' poor want? "*
8. *http://www.nrega.nic.in/misreport.htm*
9. *www.nrega.nic.in*
10. *www.mirzapur.nic.in*